Geographical Society of Central Himalaya

विश्व पर्यावरण दिवस - व्यावहारिक परिपेक्ष

पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता आवश्यक है।वस्तुस्थिति को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि पर्यावरण दिवस अखबारों और स्थापित पर्यावरणविदों तक सिमट कर रह गया है।पहले पर्यावरण का पर्यायवाची पेड़ (वन) माने जाते थे अब नगरपालिका अवशिष्ट पर्यावरण का पर्यायवाची प्रतीत होता हैं।पर्यावरण संरक्षण एवं रूढ़िवादिता में घनिष्ठ रिश्ता है।पर्यावरण संरक्षण के लिए समर्पित व्यक्ति में एक दृढ़ता की आवश्यकता है। बड़ी समस्याओं का हल समय के साथ हो ही जाता है। हमारी दिनचर्या से संबंधित पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारियों का निर्वहन व्यक्तिगत स्तर पर ही होना हैं।हमारे देश की जनसंख्या आकार को देखते हुए सब कुछ की अपेक्षा सरकार से करना नाजायज है। वर्तमान समय में नगरपालिका- महापालिकाओं के पास अच्छी सफाई व्यवस्था है पर उसके परिणाम प्राप्त करने में नागरिकों की भूमिका आवश्यक है। कुछ सुझाव प्रस्तुत हैं।

1.प्रत्येक आयु वर्ग,स्त्री-पुरुष की पर्यावरण संरक्षण में भागीदारी होनी चाहिए।हमें समझना चाहिए की भागीदारी का स्तर 5 से 10% ही रह पाएगा।

2. हम उपयोग में कमी लाए और बेस्ट- अपशिष्ट को न्यूनतम रखें। इससे पानी और अन्न, कागज,प्लास्टिक,वॉलपैन,चौकलेट आदि आदि।

3. हर स्थान,मोहल्ले,कॉलेज,सचिवालय,निदेशालय,ग्राम,वार्ड में एक पर्यावरण संरक्षण समिति (ई.सी.सी.) का गठन कर उसके कार्य क्षेत्र का निर्धारण कर छमाही रिपोर्ट आए। ई.सी.सी.पूरी तरह से गैर राजनीतिक होनी चाहिए।किसी स्थान पर हर वर्ग के लिए कर्तव्यों का ज्ञापन कर 5 जून को बैठक आयोजित हो।

4. हमारी राष्ट्रीय- प्रादेशिक-स्थानीय -व्यक्तिगत पर्यावरण समस्याओं पर चर्चा होनी चाहिए।

5.जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशीलता एवं समायोजन सजगता।

5जून,2023

ज्योग्राफिकल सोसाइटी ऑफ सेंट्रल हिमालय उत्तराखंड,भारत

www.gsch.co.in